आर. एन. आई – राजहिन/2003/9899 डाक पंजीयन संख्या – श्रीगंगानगर/105/2014-2016

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष : चौदहवां | अंक : पहला | मई-2016

5 सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
अमृत का फव्वारा
(गुरु रामदास जी की बानी)
सुबाकोक्यू, कोलंबिया

19 परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब
सवाल-जवाब

29 परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को संदेश
विदाई संदेश

32 परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को भजन में बिठाने से पहले हिदायतें
अमृत वेला

34 दिल्ली और अहमदाबाद में सतसंग का कार्यक्रम
धन्य अजायब

संपादक
प्रेम प्रकाश छाबड़ा
99 50 55 66 71 (राजस्थान)
98 71 50 19 99 (दिल्ली)

उप संपादक
नन्दनी

विशेष सलाहकार
गुरमेल सिंह नौरिया
96 67 23 33 04
99 28 92 53 04

सहयोग
सुमन आनन्द
परमजीत सिंह

पृष्ठ सज्जा
राजेश कुक्कड़

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने नेशनल प्रिन्टर्स, नारायणा, नई दिल्ली से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया।

e-mail : dhanajaibs@gmail.com | Website :www.ajaibbani.org

प्रकाशन दिनांक 1 मई 2016 –170 – मूल्य – पाँच रुपये

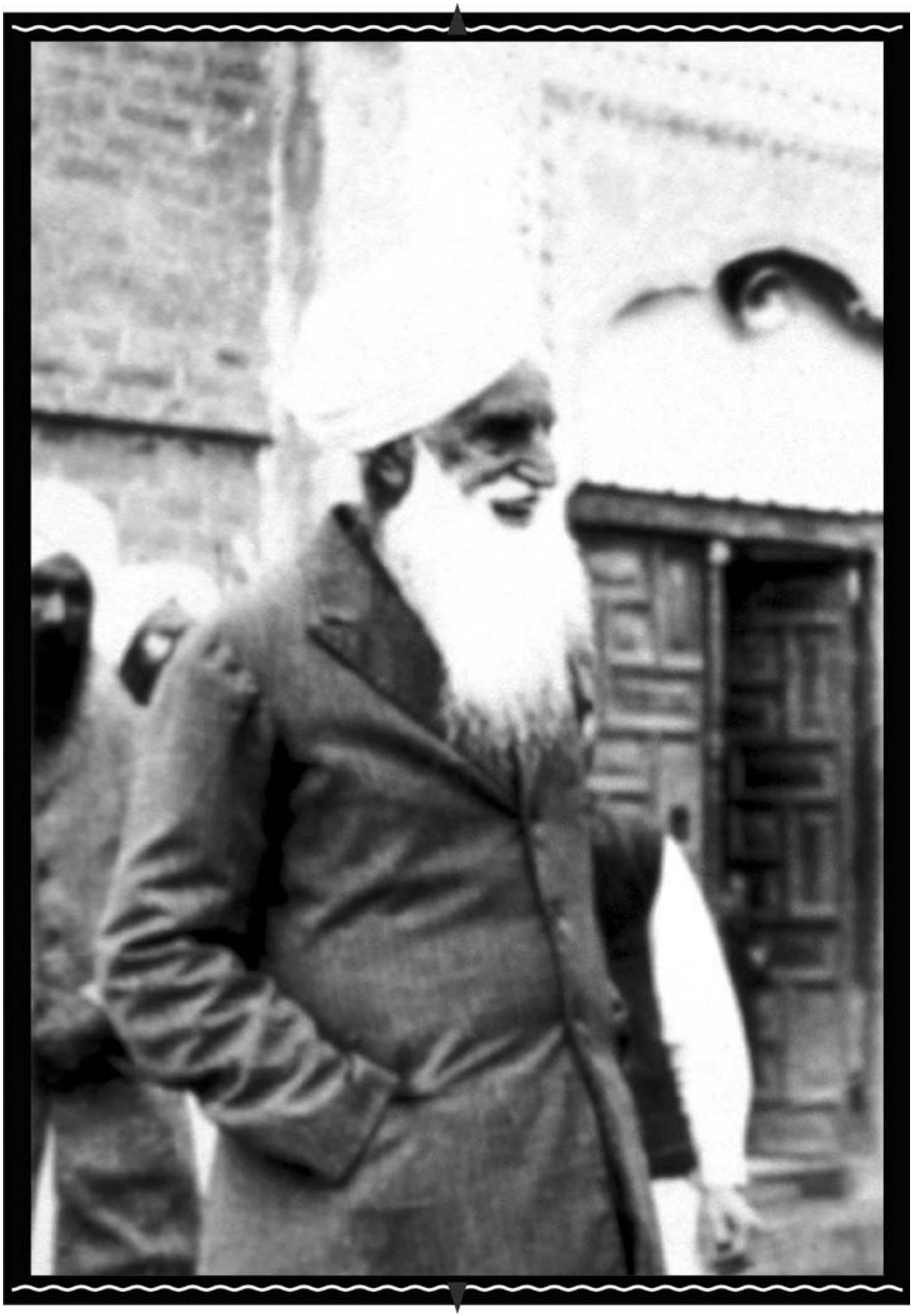

सतसंग- परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

अमृत का फव्वारा

गुरु रामदास जी की बानी | DVD - 576 | सुबाकोक्यू, कोलंबिया

परमपिता परमात्मा कुल मालिक सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार है, जिन्होंने हमारी आत्मा पर रहम किया और अपना यश करने का मौका दिया है। यह आपकी दया है जो हम सब मिलकर बैठे हैं। आपके आगे गुरु रामदास जी महाराज का गुरु प्यार का शब्द रखा जा रहा है।

सन्त-महात्माओं की बानी पवित्र हृदय से निकली होती है। इसका एक-एक लफ्ज करोड़ो रूपयों का है। हम इसका अंदाजा ही नहीं लगा सकते क्योंकि इस बानी ने हमारी जिंदगी पलट देनी है, हमारा मन पलट देना है। यह बानी परमात्मा का संदेश देती है। सोचकर देखें! हम इसकी क्या कीमत लगा सकते हैं?

सावन–सावन दुनियां कैहंदी, मैं ओहदी मस्तानी,
हसदा–हसदा दे गया मैनूं, कृपाल अमर निशानी, (2)
सावन–सावन दुनियां कैहंदी .....

जद दा सावन नज़री आया, पलकां विच लुकाया,
अजे तक ना भुल्ल ही सकया, ज्यों सावन मुस्काया, (2)
सावन प्यारा, सावन सोहणा, (2) सावन दिलबर जानी,
हसदा–हसदा .....

ओह सी इक नूरानी चेहरा, अक्खां विच समाया,
चोज़ निराले शान निराली, अजे समझ ना आया, (2)
नित ही रोवां नित ही गांवां, (2) लोग कहण दिवानी,
हसदा–हसदा .....

चिट्टी दाढ़ी चौड़ा मत्था, पगड़ी बन्न सज आया,
परियां तक ओहनूं सजदे करदियां, चन्न वी अम्बर चढ़ आया, (2)
दुनियां ओहनूं बाहर लब्भदी, (2) दे गया किते झकानी,
हसदा–हसदा .....

चलो नी सईयो सिरसे नूं चलिए, कृपाल ने होका लाया,
सावन दयालु ने रिमझिम लाई, 'अजायब' ने भी गाया, (2)
आओ सब ही दर्शन करिऐ, (2) ओह सूरत नूरानी,
हसदा–हसदा .....

वह समय बहुत सुहावना था और वे जीव बहुत भाग्यशाली थे जिन्हें परमात्मा सावन के चरणों में बैठने का उत्तम अवसर मिला। जब सावन हँसता था तो ऐसा मालूम होता था कि जैसे उनका सारा शरीर ही हँस रहा है। जैसे माता बच्चों को छोटे-छोटे उदाहरण देकर समझाती है इसी तरह महाराज सावन को बहुत उदाहरण याद थे। आप हमें हर उदाहरण को लतीफे के तौर पर परमार्थ में ढालकर समझाते थे। यह आपकी बड़ी ही प्यार भरी दया थी जिसकी महिमा ब्यान नहीं की जा सकती। आप हमें हँसते-हँसते ही परमात्मा कृपाल के रूप में अमर निशानी दे गए।

आपका मत्था चौड़ा था, आप सफेद पगड़ी पहनते थे। आप एक जैंटलमेन गुरु थे। आप कभी अपने कपड़ो पर दाग नहीं लगने देते थे। आपकी क्या महिमा ब्यान करें, बाहर आपके कपड़े जितने सफेद थे आप अंदर से उतने ही साफ और निर्मल थे। आप हमेशा ही संगत में आकर कहते, ''आप लोग मुझे पराया न समझें, मैं आपका ही हूँ।''

प्यारेयो! जब आप प्यार से ये लफ्ज कहते तो आपके ये लफ्ज दिल को छू जाते कि आप हम सबके हमदर्दी बनकर आए हैं। ये

बातें आपके कहने की नहीं थी, आप जितना बाहर से कहते थे आपके अंदर भी इतनी ही हमदर्दी थी।

परमार्थ में देहधारी गुरु की इसलिए जरूरत है कि पूर्ण महात्मा, परमात्मा से मिलकर साधना करके परमात्मा का ही रूप हो जाता है। सब वेद-शास्त्र यह अगुवाही भरते हैं कि पूर्ण सन्त और परमात्मा के बीच कोई भिन्न-भेद नहीं होता। शरीर में कैद आत्मा परमात्मा से तभी मिल सकती है जब परमात्मा रूप गुरु शारीरिक रूप धारण करके आता है।

जब दयालु परमात्मा के रहम का समुंद्र उछलता है तो वह खुद नर रूप धारण करके आत्मा के पास आता है। परमात्मा अपने अनादी रूप में आकर अपने अनादी रूप की सहायता से आत्मा को जगाता है। रोज-रोज अपनी दया भरी दृष्टि के साथ आत्मा की अंदर से मदद करता है और मदद करके आत्मा को उसके घर पहुँचा देता है, जहाँ से आत्मा आई है।

महात्मा रविदास ने कहा है, ''आप आरे से अपने तन को कटवाना स्वीकार कर लें लेकिन पूर्ण सन्त और परमात्मा के बीच भिन्न-भेद स्वीकार न करें।'' पूर्ण महात्मा की दृष्टि हंस जैसी होती है। हंस के अंदर यह शक्ति होती है कि वह दूध और पानी को अलग-अलग कर देता है।

पूर्ण महात्मा में विवेक बुद्धि होती है, पूर्ण ज्ञान होता है। महात्मा को नाम की शान्ति, नाम के सुख का पता होता है। महात्मा को परमात्मा के मिलाप का ज्ञान होता है और विषय-विकारों के बुरे प्रभाव का भी ज्ञान होता है। महात्मा दोनों चीजों को अलग-अलग समझते हैं इसलिए वे हमें भी अपनी विवेक बुद्धि

के सहारे बड़े प्यार से समझाते हैं, ''प्यारे बच्चों! आप लोग विषय-विकारों से बचें। विषय-विकारों का पानी न पिएं। आपके अंदर परमात्मा ने अमृत रखा हुआ है उस नाम का अमृत पिएं।''

हम पूर्ण महात्मा की शरण में जाने में शर्म महसूस करते हैं दूसरी तरफ हम वेद-पुराणों के पाठ करने पर जोर देते हैं। बाल-बच्चों को छोड़कर जंगलो-पहाड़ो में चले जाते हैं। प्राणायाम करने लग जाते हैं, कान फड़वाकर बैठ जाते हैं। पूर्ण महात्मा के सुख को जुबान ब्यान नहीं कर सकती। आत्मा को जो सरूर आता है उसे भी हम ब्यान नहीं कर सकते।

परमात्मा हमारे अंदर है, पूर्ण महात्मा हमें अंदर जाने का साधन और तरीका बताते हैं। महात्मा सिर्फ तरीका ही नहीं बताते बल्कि वे अपने अनादी स्वरूप के साथ हमेशा हमारी सहायता करते हैं। पूर्ण महात्मा दिखावे की भक्ति नहीं करते और न ही अपने सेवकों को दिखावे की भक्ति सिखाते हैं। पूर्ण महात्मा कोई इश्तेहारबाजी नहीं करते, किसी की निन्दा नहीं करते।

जब परमात्मा कृपाल गंगानगर आए तो प्रबंधको ने इश्तेहारबाजी की, दीवारों पर बड़ी-बड़ी फोटो लगाने लगे। महाराज जी ने नाराजगी जाहिर की, फोटो भी हटवा दी और कहा, ''अगर हमें हीरा मिल जाए तो हम उसे कितना छिपाकर रखते हैं। उस हीरे का भेद अपने प्यारे बच्चों और प्यारी पत्नी को भी नहीं देते उनसे भी छिपाकर रखते हैं कि यह फिजूल खर्ची न कर दें। हीरे का तो मूल्य लगाया जाता है लेकिन नाम अमोलक हीरा है।''

महाराज सावन सिंह जी ऐबटाबाद (अब पाकिस्तान में है) गए। वहाँ प्रबंधको ने कहा कि शहर में मुनियादी करवाई जाए।

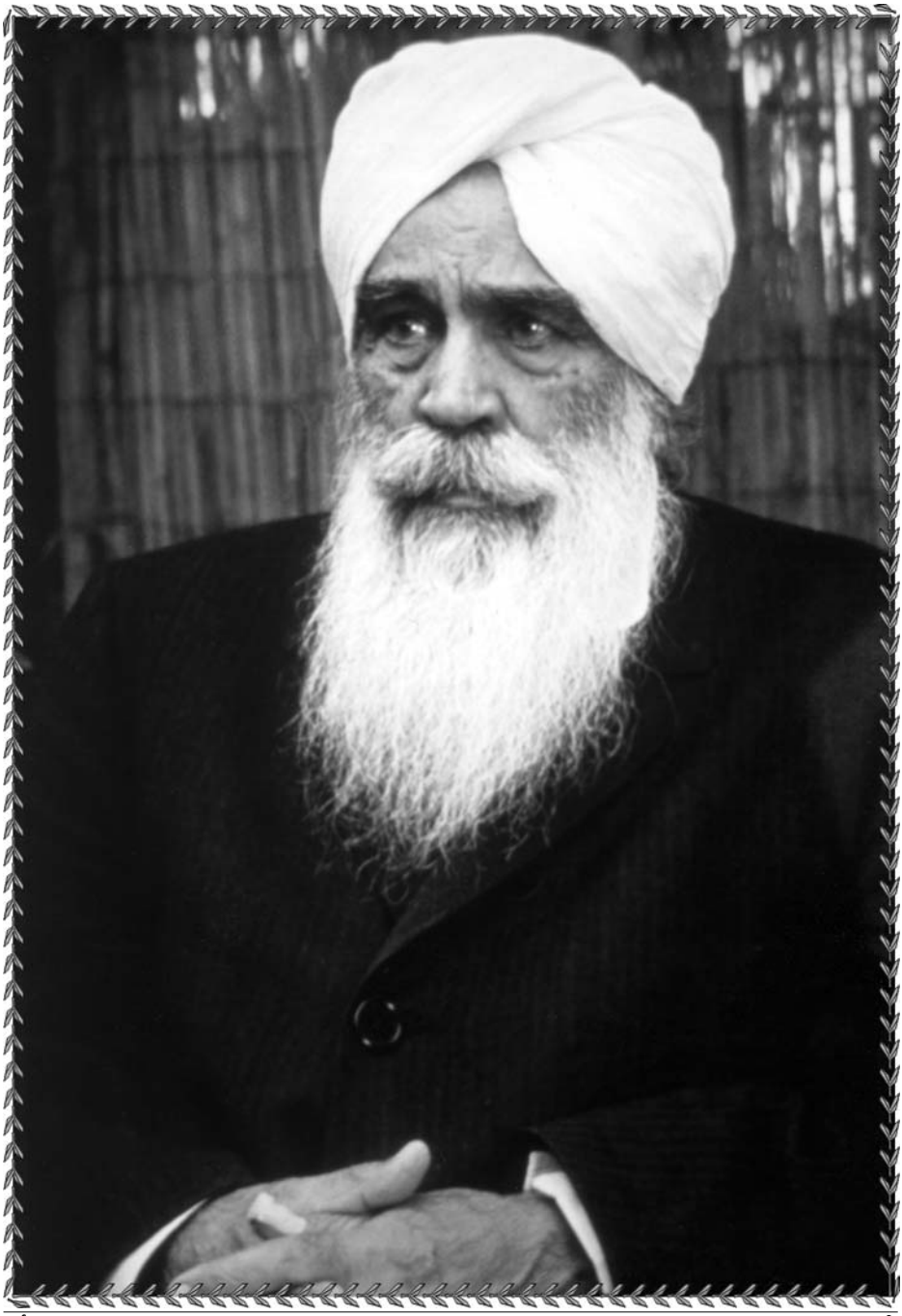

महाराज जी ने कहा कि आप अपने सतसंग का इंतजाम करें मुनियादी की फिक्र न करें। थोड़ी देर बाद विरोधी जीपों पर स्पीकर रखकर प्रचार कर रहे थे कि राधास्वामी का गुरु आया है कोई उनके पास न जाए। उनकी आँखों में जादू है जो उनके पास जाता है वह उन्हीं का हो जाता है। विरोधी जब उनके मकान के नीचे से निकले तब महाराज जी ने हँसकर कहा, ''क्यों भाई! तुम्हारी मुनियादी हो रही है कि नहीं?''

आप कहते हैं, ''सन्तों का प्रचार निन्दक करते हैं जिस तरह धनवानों के पीछे चोर लगे रहते हैं इसी तरह आजकल ही नहीं सदा से ही निन्दक सन्त-महात्माओं के पीछे लगे होते हैं। निन्दक ही उन्हें मशहूर करते हैं।'' गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैंः

वडभागी गुरु संगत पावे, भागहीन भ्रम चोटां खावे।

परमात्मा ने दरगाह में जिसके लिए फैसला कर दिया है कि इसे पूरे महात्मा की संगत मिलेगी, इसकी किस्मत में नाम लिखा है तो वह किस तरह रह सकता है।

भागहीन गुरु ना मिले, निकट बैठ्या नित पास।

अगर भाग्य में नहीं तो बेशक गुरु घर चलकर आ जाए! चाहे घर में भी क्यों न पैदा हो जाए! हमें उसकी पहचान ही नहीं आएगी कि हमारे घर में कितना कीमती लाल है।

जीव अंधा है, परमात्मा सुजाखा है। परमात्मा जिसे सुजाखा करना चाहता है उस अज्ञानी अंधे जीव को सतगुरु की शरण में भेज देता है और सतगुरु उसके अंदर नाम का दीपक जला देते हैं। उसके अंदर प्रकाश हो जाता है, वह अज्ञानता के अंधेरे को दूर करके अंदर बैठे परमात्मा के दर्शन कर लेता है।

अज्ञानी जीव को पता नहीं कि वह भवसागर कितना विशाल है? उस भवसागर को पार करते समय ऋषि-मुनि भी काँप उठे। प्यारेयो! उस भवसागर को पार करने के डर से ऋषि-मुनियों ने जंगलों में जाकर अपने शरीर को सुखाकर हड्डियों का ढ़ेर बना लिया। यह तो सतगुरु की दया ही है कि सतगुरु हमें नाम के बेड़े में बिठाकर उस भवसागर से पार ले जाते हैं।

जे वडभाग होवह् वडभागी तां हर हर नाम ध्यावै।।

गुरु रामदास जी महाराज गुरु की महिमा ब्यान करते हुए कहते हैं, ''अगर हमारे ऊँचे भाग्य हो तभी हमारे दिल के अंदर गुरु की शरण प्राप्त करने का और नाम प्राप्त करने का शौक पैदा होता है। उससे भी ऊँचें भाग्य हों तो हमारे अंदर नाम की कमाई करने का शौक पैदा होता हैं।''

नाम जपत नामे सुख पावै हर नामे नाम समावै।।

अब आप प्यार से कहते हैं, ''नाम जपने से हमारे अंदर नाम प्रगट हो जाता है। नाम में शान्ति है, सुख है और नाम ही हमारा जन्म-मरण काटता है।'' सतगुरु हमें बताते हैं कि नाम की कमाई में सब साधना का फल मिल जाता है। जब हमने महात्मा का दिया हुआ सिमरन दिन-रात अपनी जुबान पर चढ़ा लिया है फिर हम सोते-जागते, उठते-बैठते, कदम-कदम पर सिमरन करने में लगे हुए हैं इससे ऊपर और कौन-सा पाठ हो सकता है?

जब हम सिमरन के जरिए नौं द्वारे खाली करके आँखों के पीछे आकर सूरज, चँद्रमा और सितारे पार करके सतगुरु के स्वरूप को अंदर प्रगट कर लेते हैं तब हम उस मनमोहनी मूरत को सदा ही परछाई की तरह साथ-साथ लिए फिरते हैं।

जब हम दिन-रात अंदर जाकर उस अनहद बानी को सुनने में लगे हुए हैं और उस बानी के रस को चखकर विषय-विकारों के स्वाद छोड़कर नाम का रस पीने लग जाते हैं तो इससे बड़ा और कौन-सा वैराग हो सकता है? न घर बार छोड़ना है, न बेटे-बेटियाँ छोड़ने हैं, न जँगलों-पहाड़ों में जाना है, न शरीर पर भगवे कपड़े धारण करने है और न ही कान फड़वाने है। गृहस्थ की जिम्मेवारियाँ निभाते हुए सुबह उठकर दो-तीन घंटे अपने भजन-सिमरन को देकर प्यारे सतगुरु की दया से अपने घर पहुँच जाते हैं।

गुरमुख भगति करो सद प्राणी।।

अब गुरु रामदास जी महाराज कहते हैं, ''वैसे तो दुनिया के सारे ही जीव अपनी-अपनी जगह भक्ति करने में लगे हुए हैं। कोई माया की भक्ति करता है। कोई बच्चों की तो कोई मुल्क की भक्ति करता है लेकिन ये सारी भक्तियां हमें बार-बार संसार में लेकर आती हैं। सच्ची भक्ति हमें देह के बंधनों से आजाद करती है; वह गुरु की भक्ति है।'' गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैंः

गुरु की भक्ति करे क्या प्राणी, ब्रह्मा, इन्द्र, महेश न जानी।

गुरु की भक्ति कोई छोटा सा पदार्थ नहीं। ब्रह्मा दुनिया को पैदा करता है, विष्णु पालन करने वाली शक्ति है और महेश संहार करने वाली शक्ति है लेकिन गुरु की भक्ति उनके नसीब में भी नहीं थी। हम भूले हुए दुनियावी जीव गुरु की क्या भक्ति कर सकते हैं? जब रहम का समुद्र उछलता है तो वह खुद ही किसी न किसी नर रूप में आकर हमें अपनी भक्ति में लगाता है। यह तो परमात्मा कृपाल की दया है कि उसने हमें शब्द की भक्ति में जोड़ा है।

हिरदै प्रगास होवै लिव लागै गुरमत हर हर नाम समाणी।।

आप प्यार से कहते हैं कोई भी महात्मा हमें अंधविश्वास देने के लिए नहीं आता। वह बड़े प्यार से हमारे कर्मों के मुताबिक पहले दिन ही हमें ज्योत और आवाज का अनुभव देता है। सैंकड़ों आदमी बैठे होते हैं लेकिन सबको अपने-अपने कर्मों के मुताबिक अनुभव होता है। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''मियाँ बीवी को भी एक जैसा अनुभव नहीं होता।''

पूर्ण महात्मा हमारे अंदर शब्द का दीपक जलाकर अँधकार का नाश कर देते हैं, हम प्रकाश में अपना सफर तय कर लेते हैं। जो जमीन तैयार होती है उसमें सिर्फ बीज डालने की जरूरत होती है बड़ी जल्दी फसल तैयार हो जाती है अगर जमीन को तैयार करना है तो उसकी फसल को तैयार होने में भी समय लगता है। इसी तरह जो अच्छी प्रेमी आत्माएँ होती हैं वे प्यार भरा दिल लेकर आती हैं उन्हें अच्छे अनुभव हो जाते हैं। वे जल्दी नाम लेकर तरक्की कर जाती हैं। जो घर में जाकर अभ्यास नहीं करते, डायरी नहीं रखते जिनका अभ्यास का कोई नित्य-नियम नहीं है वे जब गुरु की संगत में आते हैं तो गुरु उन पर दया करता है।

मैं जिस दिन यहाँ आया, उस बैठक में बहुत से प्रेमियों ने मुझे अभ्यास के बड़े ऊँचे अनुभव बताए। सुनकर मेरा दिल बहुत खुश हुआ। आखिर में वे प्रेमी कहने लगे कि कहीं यह हमारे मन की चालाकी तो नहीं, क्या हम सच्चाई देख रहे हैं? हार जाना उतना बुरा नहीं जितना हार मान लेना बुरा है। परमात्मा गुरु हम पर कितनी दया करते हैं। गुरु दया करके अंदर दिखाता है लेकिन हमारा मन सब कुछ लूट लेता है कि कहीं यह गलत तो नहीं!

हीरा रतन जवेहर माणक बहु सागर भरपूर कीआ।।

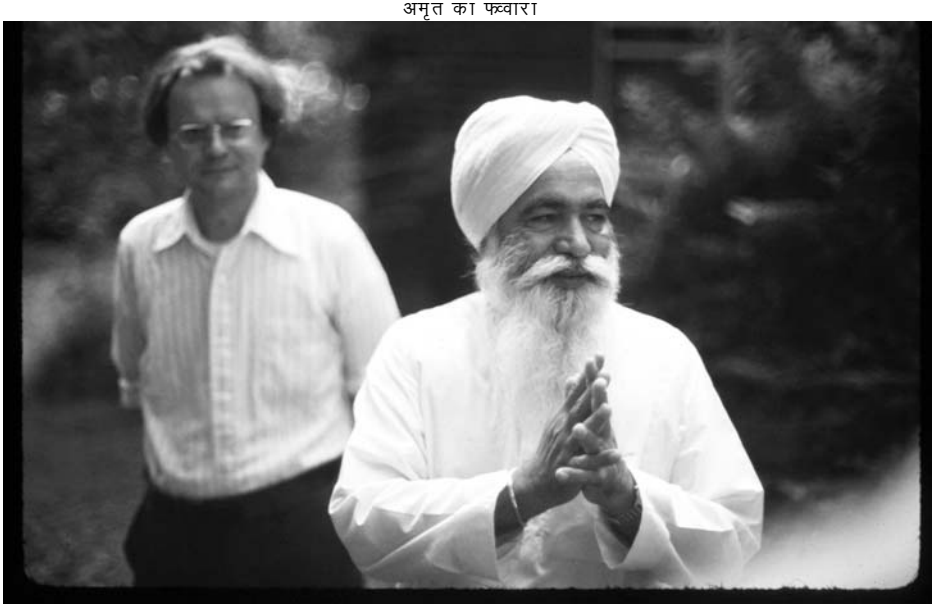

गुरु रामदास जी महाराज प्यार से बताते हैं, ''हमारी देह एक बहुत बड़ा सागर है। इस देह के अंदर नाम का हीरा है। आप सतगुरु की दया से प्यार के सागर में डुबकी लगाकर इस हीरे को प्राप्त कर सकते हैं। हीरे जवाहारात का मूल्य लगाया जाता है लेकिन नाम अमोलक हीरा है जिसका कोई मूल्य नहीं।'' गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैंः

घर रतन लाल बहु लादे, मन भरमेया लह ना सुखाइए।

जिस वडभाग होवै वड मस्तक तिन गुरमत कढ कढ लीआ।।
रतन जवेहर लाल हर नामा गुर काढ तली दिखलाया।।

सन्तों ने बानी इस किस्म की लिखी होती है कि एक तुक में सवाल है और दूसरी तुक में जवाब है। आपने ऊपर कहा था कि आपकी देह एक सागर है और इसमें 'नाम' का हीरा है। अब आप प्यार से कहते हैं, ''मैं जिस रतन का जिक्र करता हूँ वह रतन

'नाम' है। जिनके ऊँचे भाग्य होते हैं वे सतगुरु के बताए हुए उपदेश पर चलते हैं, दुनिया से धीरे-धीरे प्रीत कम करते हैं, विषय-विकारों से मन को मोड़ते हैं और मन को पलटकर अंदर जाते हैं। गुरु उन्हें हीरा पकड़ा देता है कि देख प्यारेया यह तेरा है।''

आपने मिस्टर ओबराय की किताब में भाई सुंदरदास के महाराज कृपाल के साथ जो अनुभव हुए थे वह पढ़े हैं। भाई सुंदरदास अंदर जाता था वह बड़ा अभ्यासी था। हम दोनों इकट्ठे अभ्यास करते रहे हैं, उसने अंदर सब सन्तों के दर्शन किए थे। जब महाराज कृपाल ने भाई सुंदरदास से पूछा, ''हाँ भई! अंदर का हाल सुना?'' उसने कहा, ''मैंने अंदर सब सन्तों के दर्शन कर लिए हैं लेकिन भीखा जी और शर्मद के दर्शन नहीं किए।'' महाराज जी ने कहा, ''अच्छा भई! आँखें बंद करके बैठ।'' जब वह आँखें बंद करके बैठा तो प्यारे कृपाल ने उसे शर्मद और भीखा जी के दर्शन करवाए। प्यारेयो! यह कोई कल्पना नहीं थी वह अंदर जाता था सच्चाई को देखता था।

जो लोग अभ्यास पर नहीं बैठते वे इतना कुछ देखकर भी कह देंगे कि कहीं यह हमारे मन का धोखा तो नहीं? कोई देखने वाला हो मालिक के प्यारे हमें दिखाने के लिए ही आते हैं लेकिन देखने के लिए हमें आँखें बनानी पड़ती है, दिल भी बनाना पड़ता है।

इसी तरह महाराज सावन सिंह जी सतसंग देने के लिए भसोड़ा गए। वहाँ लम्बा चोगा पहने हुए मंदिर का एक पुजारी आया और उसने महाराज सावन से कहा, आप साधु लोग ऐसे ही बातें करते हैं न आज तक किसी ने रब देखा है और न रब दिखा ही सकता है। महाराज सावन सिंह ने कहा, ''मैं सतसंग बंद कर देता हूँ, खाना भी बाद में खाऊँगा। आ जा! मैं रब दिखाने के लिए ही आया हूँ।'' लेकिन वह वापिस नहीं आया, वह बेचारा भाग्य कहाँ से लाता?

इसी तरह जब मैं पहली बार वैंकूवर गया वहाँ सिख समाज का एक प्रेमी आया और उसने मुझसे यही सवाल किया, क्या आपने रब देखा है? मैंने उसे बड़े प्यार से कहा, ''मैं तो रब नहीं देख सकता था लेकिन मैंने अपने प्यारे सतगुरु कृपाल की दया से रब देखा है और दिखा भी सकता हूँ। मुझे अपने गुरु की आज्ञा है, तू जब मर्जी आ मैं तुझे रब दिखा सकता हूँ। अफसोस! मैं कई बार वहाँ जाकर आया हूँ फिर मैंने उसकी शक्ल नहीं देखी। जीव किसके भाग्य लाए?''

गुरु रामदास जी भी यही कहते हैं, ''गुरु को देखने वाला विशाल हृदय बनाकर आए, वह दिखाता है।'' मैं कहा करता हूँ कि सन्तमत परियों की कहानी नहीं यह एक सच्चाई है।

भागहीण मनमुख नहीं लीआ तृण ओलै लाख छपाया।।

अब गुरु रामदास जी महाराज कहते हैं कि जीव किसके भाग्य लाए? परमात्मा पर्वत जितना विशाल है और वह मोह, अहंकार के पर्दे के पीछे छिपा हुआ है। मोह, माया का पर्दा इतना मोटा है कि जब तक पूर्ण परमात्मा हमारे ऊपर दया नहीं करता हम तब तक उस पर्दे को चीरकर परमात्मा को नहीं देख सकते।

भागहीण मनमुख नहीं लीआ तृण ओलै लाख छपाया।।

यह इस तरह है जैसे घास के मामूली तिनकों के नीचे लाखों रूपए दबे पड़े हों और हम कौड़ी-कौड़ी माँगते मर जाएं अगर कोई उस मामूली पर्दे को हटाकर हमें उस खजाने का वारिस बना दे तो सोचकर देखें! वह धन तो पहले भी हमारे अंदर था लेकिन उस धन के होते हुए हमने कोई फायदा नहीं उठाया। जिसने हमें यह धन ढूँढ़कर दिया हम उसका शुक्राना करते हैं।

परमात्मा पहले भी हमारे अंदर था। उसके होते हुए हमने अनेकों जन्म पाए कभी कीड़े, कभी कुत्ते, कभी गधे तो कभी हाथी बने। हम गुरु का शुक्राना इसलिए करते हैं कि गुरु ने हमें परमात्मा के साथ, आवाज और प्रकाश के साथ जोड़ दिया।

मस्तक भाग होवै धुर लिखया तां सतगुरु सेवा लाए।।

गुरु रामदास जी महाराज कहते हैं, ''यहाँ आकर परमात्मा ने एक कानून रखा है अगर ऊँचे भाग्य हों तो ही सतगुरु हमें अपनी सेवा बख्शता है, अपना यश और अपना नाम बख्शता है।''

नानक रतन जवेहर पावै धन धन गुरमत हर पाए।।

आप कहते हैं कि सतगुरु की सेवा का यह फल मिलता है कि हमें नाम का रतन मिल जाता है। सतगुरु की दया से हमारी बिछुड़ी हुई आत्मा परमात्मा से मिल जाती है। सतगुरु हमारे अंदर नाम का दीपक जलाकर अज्ञानता का अंधेरा दूर कर देते हैं। हम ऐसे सतगुरु के चरणों में उस वक्त जाते हैं जब आदि कर्ता धुर दरगाह से हमारे मस्तक में लिख देता है तभी हम उनकी सोहबत-संगत में जा सकते हैं। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैंः

आपण लिए जे मिले, विछड़ को रोवन।

हे परमात्मा! हमें इस संसार में चक्कर लगाते हुए पता नहीं कितने युग हो गए। अगर तुझसे मिलाप कर लेना हमारे हाथ में होता, हमारे इख्तियार में होता तो हम तुझसे बिछुड़कर रोते क्यों फिरते, तड़फते क्यों फिरते।

हमें भी चाहिए कि हम परमात्मा रूप गुरु का धन्यवाद करें। जिन्होंने हमें अपनी भक्ति का दान दिया और भक्ति करने का मौका भी दिया है।

11 जून 1995

***

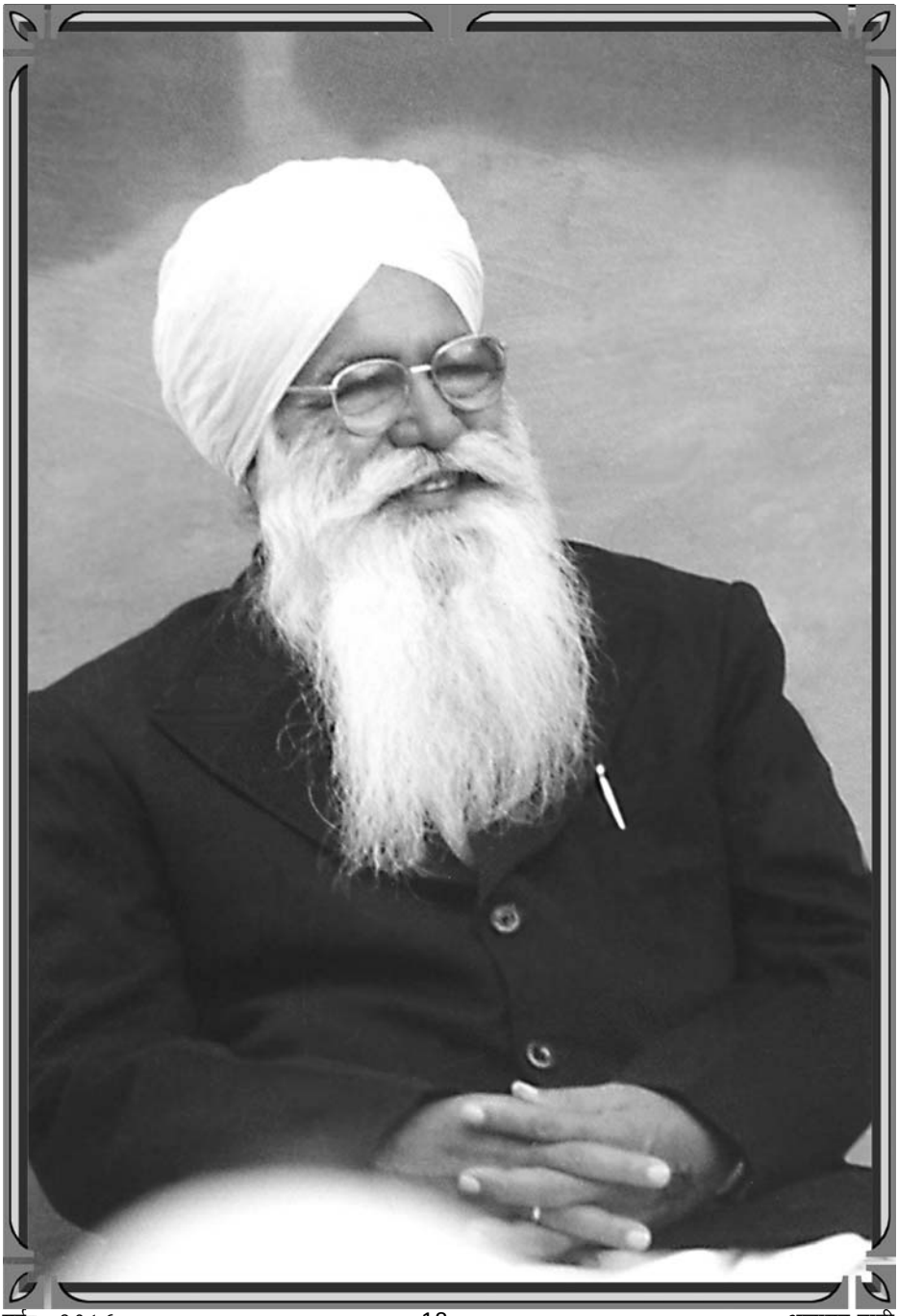

सवाल-जवाब

एक प्रेमीः- *कल आपने कहा था कि नामदान के समय हर जीव के संचित कर्मों का लेखा-जोखा गुरु अपने कब्जे में लेकर खत्म कर देते हैं। मेरी समझ में यह आया था कि जैसे-जैसे हम अभ्यास के अंदर तरक्की करते हैं, कुछ कर्म ऐसे भी होते हैं जो हमें अभ्यास करने के बाद ऊपरी मंडलों में जाकर खत्म करने होते हैं? क्या वे कोई ओर कर्म होते हैं या वे संचित कर्मों में से ही कुछ हिस्सा होता है?*

दूसरी बात मैं यह जानना चाहता था कि किस तरीके से गुरु संचित कर्मों का लेखा-जोखा खत्म करते हैं। मुझे राजा जनक की कहानी याद है कि जिस तरह राजा जनक नर्क में गए थे और तीन बार सिमरन करने से उन्होंने सारी आत्माओं को वहाँ से मुक्त करवा दिया था। क्या गुरु इसी तरह संचित कर्मों को खत्म करते हैं या कोई और तरीका है?

बाबा जीः- हाँ भई! मुझे खुशी है यह बड़ी गहराई से सोचने वाली बात है और हर एक के फायदे के लिए है। हो सकता है! ऐसा सवाल और भी कई लोगों के दिमाग में घूम रहा हो। सबसे पहले सोचने वाली बात यह है कि जो सतसंगी अंदर जाते हैं वे इसे भली-भांति समझते हैं? मैंने कई बार महाराज सावन का हवाला दिया है। महाराज सावन कहा करते थे, ''दुनिया कहती है कि हम सन्तों के पास जाते हैं, नामदान प्राप्त करते हैं, नाम की कमाई करते हैं लेकिन जब वे अंदर जाते हैं तो खुद देखते हैं कि हम सन्तों के पास जाते थे या सन्त हमें खींचते थे? वे जब तक अंदर ऊपर के मंडलों

में नहीं जाते तब तक ही कहते हैं कि हम अभ्यास करते हैं। जब ऊपर जाते हैं तो उन्हें मालूम होता है कि कोई उनसे भजन करवा रहा था। फिर वे यह भी कहते हैं कि कोई हमें उठा भी रहा था और कोई अंदर से प्रेरणा भी दे रहा था।''

मैं यह भी कहा करता हूँ कि सन्त-सतगुरु नामदान देते समय हमारे अंदर इस किस्म का अरेंजमेंट कर देते हैं कि हमारे कुछ कर्म कटते रहते हैं और हम कुछ तरक्की भी करते रहते हैं। जिंदगी में प्रालब्ध की वजह से कुछ ऐसे भी कर्म पैदा होते हैं जो वक्त पर आकर बर्दाश्त से बाहर होते हैं। जब हम भजन-अभ्यास करते हैं तो हम उस वक्त की तैयारी में होते हैं कि हमारी आत्मा के अंदर ताकत आए और हम उन कर्मों को बर्दाश्त कर सकें।

मैं यह भी बताया करता हूँ कि जब जोर से तूफान आता है तो बड़े-बड़े पेड़ उखड़ जाते हैं। इस तरह जब कर्मों का वेग चलता है और वक्त पर आकर घटना घटती है उस समय हम चिल्लाते हैं दुखी होते हैं। ऐसे वक्त में जो प्रेमी अभ्यास नहीं करते वे डोल जाते हैं, खुष्क भी हो जाते हैं।

जो प्रेमी कमाई करते हैं तकलीफ उन्हें भी होती है लेकिन वे इस राज को समझते हैं। उन्हें कोई शिकायत नहीं होती कि हमारे ये दुख दूर करें बल्कि वे परमात्मा के भाणें में मजबूत रहते हैं। उन्हें मालूम होता है कि जितने कष्ट आ रहे हैं इससे हमारी उतनी ही सफाई हो रही है। स्वामी जी महाराज कहते हैंः

दुख की घड़ी गनीमत जानों, सुख में रहत सदा मन गाफिल।

दुख की घड़ी को गनीमत समझें क्योंकि सुख के अंदर मन गाफिल होता है। दुख की घड़ी में मन नरम हो जाता है। जो अंदर

जाते हैं वे कहते हैं कि उस वक्त का फायदा उठाएं अभ्यास करें। आप सोचकर देख सकते हैं कि हर सतसंगी का ख्याल ऐसा नहीं होता। सतसंगी मामूली सी तकलीफ में घबराकर गुरु के आगे विनतियाँ करता है अरदासें करता है अगर ऐसे वक्त पर उसकी मदद न हो तो वह खुष्क हो जाता है।

हमें यह सब कुछ अंदर जाकर ही समझ आता है कि गुरु किस तरह दया करता है, गुरु के दया करने का कौन सा तरीका है और गुरु किस तरह हमारे कर्म काटता है? हम जब तक बाहर बैठे हैं थोड़ा बहुत सुनकर विश्वास भी आता है, धीरज भी रखते हैं हमें ढ़ाढ़स भी मिलती है। सन्त हमेशा इस बात पर जोर देते हैं कि सच्चाई का पता लगाने के लिए आप खुद अंदर जाएं और देखें।

मैं आपको बताया करता हूँ कि बाबा बिशनदास जी के पास 'दो-शब्द' का भेद था। उन्होंने नीचे वाले दोनों मंडलो का प्रेक्टिकल किया हुआ था। जब उन्होंने दया दृष्टि करके मुझे मेरे पिछले जन्म के बारे में जानकारी दी, सच्चाई दिखाई। उसके बाद जिनके साथ मेरा लेन-देन था उन्हें भी आँखों के आगे लाए कि जितना-जितना उनका हिसाब-किताब था वह भी दिलवा दिया।

जिस माता-पिता ने मेरा पालन-पोषण किया था उनके बारे में बाबा बिशनदास जी की दया से मुझे खुद ही ज्ञान हो गया था कि मैंने इनका कितने वक्त तक देना है, इन्होंने मेरा क्या देना है और मैं इनके बीच क्यों आया हूँ? मैंने घर छोड़ने से कई साल पहले ही उन्हें बता दिया था कि आपका मेरा सम्बंध कितने वक्त का है। बाद में मैंने मालिक की याद में लग जाना है। जब इतना ज्ञान सिर्फ दूसरी मंजिल पर पहुँचे हुए महात्मा को हो सकता है तो आप सोचकर देखें! आपको पूरा रास्ता मिल गया है। आपको पूर्ण सन्त

मिले हुए हैं अगर आप आलस्य न करें तो आप खुद देख सकते हैं, आपको ज्ञान हो सकता है?

सतगुरु और अच्छी कमाई वाले सतसंगी संयम में रहते हैं। इनके पास कमाल का धीरज और अनुशासन होता है। ये कुदरती कानून के खिलाफ जाकर किसी भी घटना को नहीं रोकते बेशक यहाँ से चलकर वहाँ कोई एक्सिडेंट हो जाए; ये ऐसी बातों के लिए करिश्में नहीं दिखाते और न ही अपने लिए किसी ऐसी घटना को रोकने के लिए कुछ करते हैं। कुदरत के कानून के मुताबिक जो घटना घटती है ये उसे बड़ी आसानी से स्वीकार करते हैं।

अच्छी कमाई करने वाला पिछड़ी जाति का एक सेंसी महाराज सावन सिंह जी का नामलेवा था। उसकी पत्नी बहुत झगड़ालू थी। वह उसे बहुत ज्यादा परेशान करती थी, भजन नहीं करने देती थी कभी-कभी उसे डंडे भी मारती थी। उसने एक बार महाराज सावन के पास बातों ही बातों में बात की। अगर कोई सेवक कमाई करके सन्तों से कोई रुहानी सवाल पूछे तो सन्त अपनी मौज में कभी-कभी सेवक को दया-मेहर करके बता देते हैं इशारा कर देते हैं।

महाराज सावन सिंह जी ने उससे कहा, ''देख प्यारेया! तू पिछले जन्म में कौआ था और यह गधी की योनि में थी। तू इधर-उधर पेड़ो पर घूमता रहता था और यह धोबियों के पास थी। इसकी पीठ छिली हुई थी उस पर जख्म थे। तू स्वाद लेने के लिए अपनी चोंच इसकी पीठ के जख्म पर मारकर पेड़ पर जाकर बैठ जाता था। देना-लेना तो हर एक को चुकाना पड़ता है। अब यह तेरी पत्नी बनी और तू इसका पति बना। मेरे भाई! अगर इसी जन्म में लेखा निपट जाए तो बहुत अच्छा रहेगा।''

मैं तकरीबन पंद्रह साल पहले कुछ दिन संगरिया में रूका था। इस प्रेमी ने अपना डेरा उठाकर किसी और जगह जाना था। उस औरत ने इसे कई डंडे मारे और उसके बाद इसके मुँह में डंडा डाल दिया। मैंने काफी कुछ देखा आखिर में मैं वहाँ पर बैठ गया।

जब ये लोग वहाँ से चले तो मैं इनके पीछे-पीछे चल पड़ा लेकिन मैंने इन पर खुद को जाहिर नहीं होने दिया कि मैं इनके पीछे-पीछे क्यों आ रहा हूँ। मैं एक किलोमीटर तक गया आखिर इन्होंने यह सोचा कि यह बंदा हमारा पीछा क्यों कर रहा है? इन्होंने कहा, ''रब के बंदे! तू हमारा पीछा क्यों कर रहा है, क्या पूछना चाहता है या हमारी तहकीकात कर रहा है?''

मैंने कहा, ''प्यारेया! मैं यह देख रहा हूँ कि तू बिल्कुल नहीं बोलता और यह औरत इंसानियत वाली कोई बात नहीं कर रही। तेरे गले में डंडा डाल रही है अगर तू मुँह खोल दे तो हो सकता है कि यह तेरा गला ही फाड़ दे।'' उन दोनों ने मुझे बिठा लिया और कहा कि आप समझदार हैं बैठ जाएं।

उसने बताया कि आज से चालीस साल पहले हमें महाराज सावन सिंह जी से 'नामदान' मिला था। मैंने महाराज सावन को अपनी दुर्दशा बताई तो उन्होंने हमें ये कहानी बताई थी। मैं उन पर विश्वास करता हूँ। मैं इसी तरह से अपना भजन-सिमरन करता हूँ। मैं मीट नहीं खाता शराब नहीं पीता। मेरी यह हालत एक दिन की नहीं तकरीबन हर रोज ही थोड़ी बहुत चलती रहती है। दूसरे-तीसरे दिन तो जरूर ही होती है। मैं तो अपने उस कर्म का फल दिल लगाकर भोग रहा हूँ।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जो अंदर जाते हैं वे इस सच्चाई को समझते हैं कि परिवार और यारी-दोस्ती आपके

पिछले लेन-देन के हिसाब के मुताबिक होती है। जिसके साथ आपका अच्छा देन-लेन है उसके साथ प्यार होगा और जिसके साथ पिछले जन्मों में आपका लेन-देन बिगड़ा हुआ है उसके साथ जरूर आपकी खटपटी होगी।''

आपने मिस्टर ओबराय की किताब में सुंदरदास की कहानी पढ़ी होगी। सुंदरदास मेरे पास बीस साल रहा। वह महाराज सावन सिंह जी का खास प्यारा था। वह काफी वक्त महाराज सावन सिंह के पास रहकर सेवा करता रहा। एक दिन महाराज सावन ने मौज में आकर उसे बताया, ''सुदंरदास! तेरी बीवी संसार छोड़ जाएगी तेरा जवान लड़का और लड़की संसार छोड़ जाएंगे। तेरा दिमाग खराब हो जाएगा ऐसी हालत में तेरे हाथों से कत्ल हो जाएगा। तुझे बीस साल की सजा होगी लेकिन तू जेल में छह साल ही सजा भोगेगा मैं तेरी संभाल करूंगा।''

महाराज सावन ने जिस वक्त सुंदरदास को यह बात बताई उस वक्त सुंदरदास की शादी भी नहीं हुई थी। सुंदरदास शादी नहीं करवाना चाहता था क्योंकि उसे घटना का ज्ञान था। सुंदरदास बताया करता था कि मैंने महाराज सावन से हँसकर कहा था ''जी! मैं शादी ही नहीं करूँगा तो फिर ऐसी हालत क्यों होगी।''

समय आने पर इस तरह के हालात बन गए कि उसके परिवार वालों ने कहा कि तू शादी कर नहीं तो हम परिवार के पाँचों सदस्य कुँए में कूद रहे हैं इसलिए उसे शादी करनी पड़ी और सारी घटनाएँ घटी। वह अडोल रहा। उसने परमात्मा के भाणे को मीठा करके माना। उसे आखिरी वक्त तक इस घटना का ज्ञान था।

सुंदरदास की राजा फरीदकोट के साथ अच्छी मेल-मुलाकात थी। उसे सारी कहानी का पता था कि बाबा का दिमाग ठीक नहीं।

इसके घर में बहुत कुछ गुजर चुका है। सुंदरदास ने जज से कहा,''जब मैंने कत्ल किया है तो तुम मुझे सजा क्यों नहीं देते?'' सुंदरदास ने जज को बताया कि मेरे गुरुदेव ने मुझे बताया हुआ है कि मुझे बीस साल की सजा होगी लेकिन मैं छह साल ही काटूँगा।

जब हिन्दुस्तान आजाद हुआ उस समय हिन्दुस्तान में बीस साल की सजा वाले कैदियों को माफी के तौर पर रिहा किया गया। उस वक्त सुंदरदास के जेल में छह साल हुए थे। जब वह अपनी सजा काटकर वापिस आया उस समय मैंने अपनी आँखों से जो उसका हाल देखा है उसका जिक्र किताब में किया गया है।

सुंदरदास बहुत अच्छा अभ्यासी था। सुंदरदास मेरे साथ अभ्यास किया करता था। एक दिन अभ्यास करते समय उसकी टाँग जल गई। उन दिनों हमारी आठ घंटे की बैठक हुआ करती थी। तब उसने अभ्यास से उठकर यही कहा, ''आज अभ्यास में जितना रस आया है उतना जिंदगी में पहले कभी नहीं आया।'' जबकि उसे ज्यादा से ज्यादा तकलीफ थी। उस किताब में सुंदरदास का इंटरव्यू बयान किया गया है जिसमें सुंदरदास ने हुजूर कृपाल के सामने अंदर के नजारे बताए हैं।

मैं हमेशा ही प्रेमियों को सन्तबानी मैगजीन पढ़ने के लिए कहा करता हूँ। मैगजीन में ऐसे बहुत से सतसंग और सवाल-जवाब छप चुके हैं। मैं जब पिछले टूर पर सन्तबानी आश्रम अमेरिका में गया तब मैंने थोड़ा-थोड़ा करके काफी कुछ अंदर के मंडलों के बारे में बयान किया था कि हम गुरु की दया के बिना सतसंग में नहीं जा सकते नाम प्राप्त नहीं कर सकते।

गुरु हमारे साथ होते हैं। गुरु नामदान देते वक्त हमारे ऐसे कर्म काटते हैं जो कर्म हमें अंदर जाने में बाधा डालते हैं तो हम

तरक्की भी करते जाते हैं। जब हम अपने ख्याल को तीसरे तिल पर एकाग्र करते हैं तब जिस गुरु ने हमें नाम दिया होता है, वह हमसे पहले ही वहाँ खड़े होते हैं। हम जैसे-जैसे ऊपर वाले मंडलों में जाते हैं गुरु वैसे-वैसे हमारी आत्मा को कर्मों के बोझ से हल्का करते जाते हैं।

मैंने यह भी बताया था कि ज्यादा अरसा त्रिकुटी में रहकर अभ्यास करना पड़ता है। वहाँ संचित कर्मों का खजाना जमा होता है वहाँ हमारी आत्मा साफ हो जाती है। जिस तरह हम थ्रेशर के अंदर गेहूँ के दाने डालते हैं तो तूड़ी एक तरफ और दाने एक तरफ हो जाते हैं। इसी तरह बुरे कर्मों का असर आत्मा से उतर जाता है और हमारी आत्मा ऊपर कारण मंडल में चली जाती है।

हम अंदर के मंडलों से बिल्कुल नावाकिफ होते हैं अगर सतगुरु साथ न हों तो हम कभी भी अंदर नहीं जा सकते। यह कहने की बात नहीं इसे बयान नहीं किया जा सकता। हम जैसे-जैसे सूक्ष्म, महा सूक्ष्म के ऊपर के मंडलों में जाते हैं तब खुद ही अपनी आँखों से देखते हुए जाते हैं। शुरु में हमारी आत्मा सच्चखंड से आई थी हम जब तक सच्चखंड नहीं पहुँच जाते सन्त हमारा साथ नहीं छोड़ते। वहाँ सन्त हमारी आत्मा को परमात्मा के आगे खड़ा करके यही अरदास करते हैं, ''यह तेरा जीव है। भूल गया था माफी माँगने के लिए आया है।''

स्वामी जी महाराज ने कहा था अगर आप जीते जी प्रेक्टिकल करना चाहते हैं, देखना चाहते हैं, यह मसला हल करना चाहते हैं तो यह आपकी बहादुरी है लेकिन अंदर जाने के लिए सबसे पहले गुरु की दया प्राप्त करें। आज हम संगत में अपनी-अपनी कमाई के

हिसाब से ही भरोसा रखे बैठे हैं, श्रद्धा बनाकर बैठे हैं। जिनकी कमाई ज्यादा है उनकी ज्यादा श्रद्धा बन जाती है क्योंकि वे थोड़ा-बहुत सच्चाई को देखते रहते हैं। वे सच्चखंड पहुँचकर गुरु के ऋणी हो जाते हैं; उन्हें सच्चाई का ज्ञान हो जाता है। हम जब तक बाहर बैठे हैं तब तक मन कई बार अभाव ला देता है खुष्क कर देता है।

प्यारेयो! सब सन्त यही बताकर गए हैं कि यह संसार कर्मभूमि है। यह शरीर हमें कर्मों का भुगतान करने के लिए ही मिलता है। हम इसमें बैठकर अपने अच्छे-बुरे कर्मों का भुगतान कर रहे हैं। गीता में कृष्ण ने अर्जुन को बताया था कि न तो अच्छे कर्म देह के बंधनों से मुक्त करवा सकते हैं और न ही बुरे कर्म देह को मुक्त करवा सकते हैं। बुरे कर्मों को लोहे की बेड़ियां और अच्छे कर्मों को सोने की बेड़ियां कहकर बयान किया गया है। बेड़ी आखिर बेड़ी होती है। मुक्ति नाम में है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

दद्दा दोष ना दीजे काहूँ, दोष कर्मां आपणयाँ।
जो मैं कीता सो मैं पाया, दोष ना दीजै अवर जना।।

हमें चाहिए कि हम श्रद्धा-प्यार से सन्तों के बताए हुए रास्ते और युक्ति के मुताबिक 'शब्द नाम' की कमाई करें। अंदर जाएं ताकि हम इस कर्मों की कैद से जीते जी ऊपर उठें और अपने सतगुरु की खुशियाँ प्राप्त करें।

***

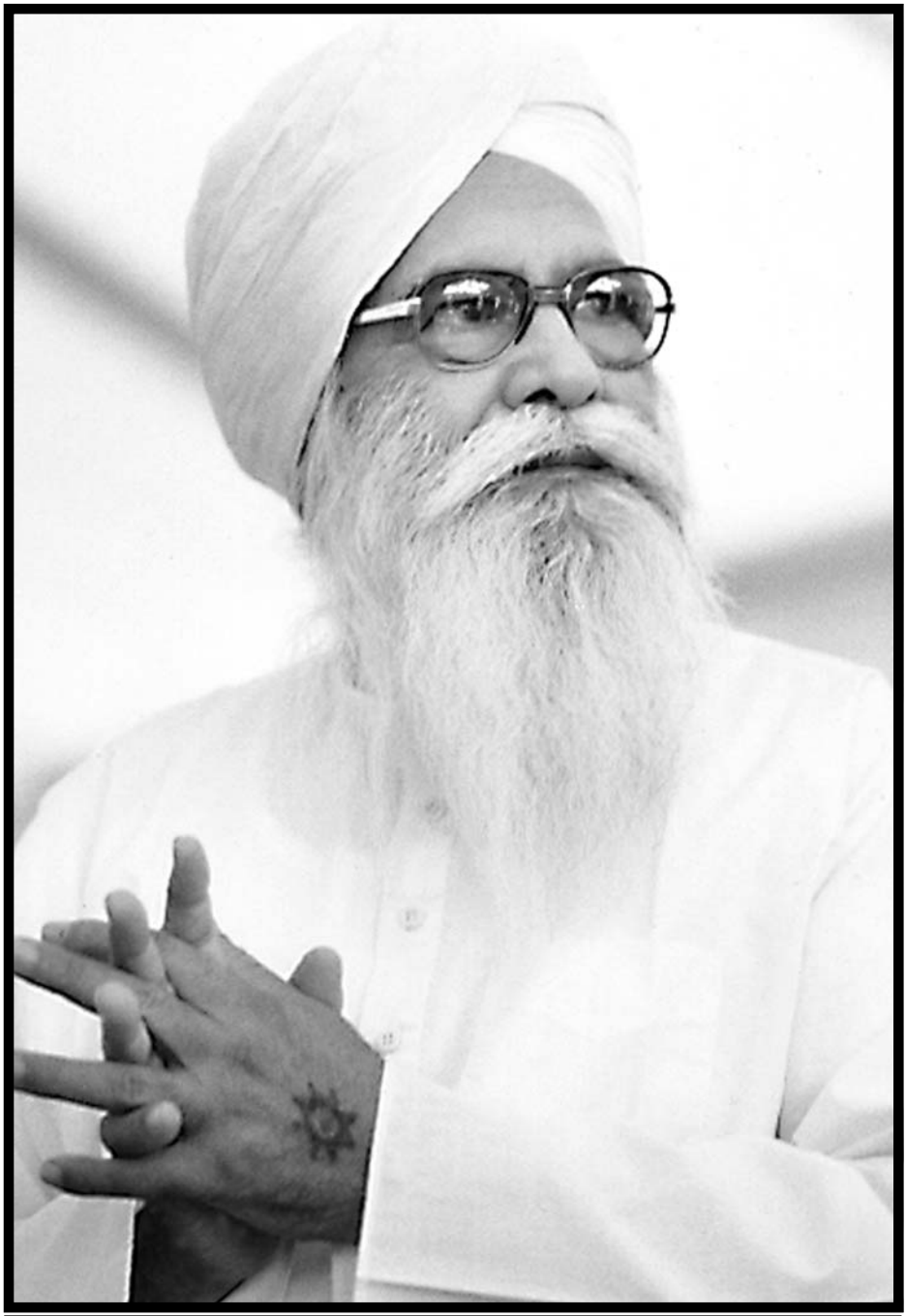

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा

विदाई संदेश

मैंने कई दिनों से आप सब लोगों को अपने परमपिता कृपाल का यश सुनाया और उनकी महिमा गाई। मैंने पहले भी बताया था अगर हम सारी धरती का कागज बना लें! सारे समुद्र की स्याही बना लें! सारी वनस्पति की कलम बना लें! फिर भी हम उस महान परमपिता कृपाल की महिमा नहीं लिख सकते। उनकी महिमा बोलकर नहीं बता सकते वह महिमा देखने से ताल्लुक रखती है।

वह नूर था, वह प्रकाश था, वह सोहणा था। उस सोहणे को देखने के लिए दुनिया ने जंगल-पहाड़ छाने, अन्न छोड़ा और कंदमूल चुगकर खाया फिर भी उस सोहणे ने उन लोगों को दर्शन नहीं दिए। जिन लोगों के दिल में सिर्फ उसके लिए जगह थी प्यार था और उससे मिलने की तड़प थी वह उन्हें उनके घर आकर ही मिला। वह हमदर्द था वह प्यार का सागर था। वह दोनों हाथों से दात लुटाता था और उसने दात लुटाई भी।

सवाल तो हमारे मांगने का था। जिसकी जैसी मांग थी, जिसका जैसा प्यार था उसने उसे वैसा ही दिया। मैं आपको कई दिन से पाँच जानी दुश्मन डाकुओं के बारे में खोलकर समझा रहा हूँ कि ये डाकु हर इंसान को अंदर से ही डंक मारकर बेहोश किए रखते हैं। इन पाँच डाकुओं ने किस तरह दुनिया को पागल किया हुआ है? ये जीव को चरित्र भरे लारे लगाकर मृगतृष्णा में फँसाए रखते हैं। आखिर इंसान को अज्ञानता के गहरे गड्ढे में गिरा देते हैं।

मैंने यह भी बताने की कोशिश की है कि सच्चखंड वासी गुरु के साथ जितना भी ज्यादा से ज्यादा प्यार किया जाए कम है। उस

गुरु को हमारे प्यार की जरूरत नहीं होती वह तो खुद अपने गुरु के प्यार में फँसा होता है। जिन भोगों का अंत दुख है उन भोगों से परहेज करें, उन्हें सुख न समझें। आखिर इन्होंने आपको दुखों में ही फँसाना है। गुरु अर्जुनदेव जी ने कहा है:

हे कामी नर्क विश्रामी, बहो जोनि भ्रमणावें।

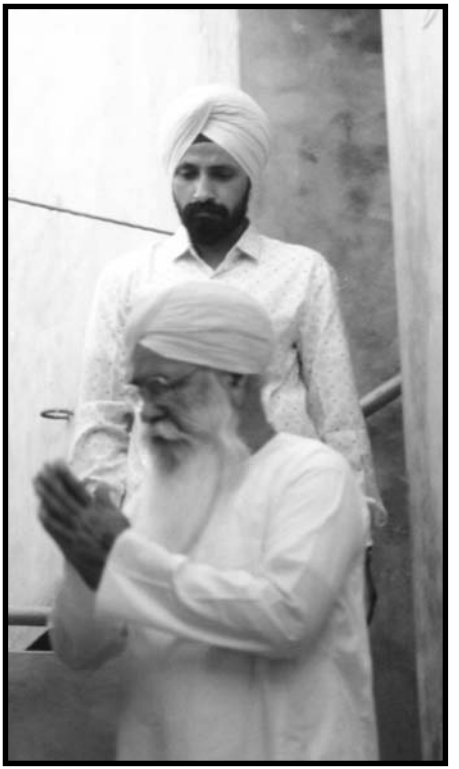

कबीर साहब कहते हैं, ''काम और नाम की दुश्मनी है, ये दोनों एक जगह इकट्ठे नहीं रह सकते जिस तरह अंधेरा और प्रकाश इकट्ठे नहीं रह सकते।'' जिस मंदिर के अंदर हम अपने गुरुदेव को बिठाना चाहते हैं उस मंदिर को पवित्र रखें उसे विषय-विकारों में खराब न करें तभी वह आपके अंदर बैठने का मन बनाएगा।

अगर आपकी जगह साफ है और आपने उसके लिए जगह बना रखी है तो यह इस तरह है जैसे आग के ऊपर जितनी ज्यादा लकड़ियां डालेंगे उतना ही भाँबड़ मचेगा। आप मन को जितना ज्यादा खुल्ला छोड़ेंगे इसे लज्जतें देंगे यह आपके अंदर उतनी ही ज्यादा ख्वाहिशें पैदा करेगा।

पवित्र जिंदगी व्यतीत करना भजन-सिमरन करना किसी के ऊपर एहसान करना नहीं यह हम अपनी आत्मा के ऊपर दया कर रहे होते हैं।

काम हमेशा ही इंसान की बेइज्जती का कारण बनता है। सतसंगी के लिए इससे बचना बहुत जरूरी है। हम इन पाँचों दुश्मनों से तभी बच सकते हैं जब हम सिमरन के जरिए रोम-रोम में फैली हुई आत्मा की धाराओं को तीसरे तिल पर एकाग्र करें। इन डाकुओं की स्थूल गाँठ हमारी आँखों के पीछे सूक्ष्म त्रिकुटी ब्रह्म में है। अगर हम अपनी आत्मा से स्थूल, सूक्ष्म और कारण के पर्दे उतारकर पारब्रह्म में पहुँच जाएंगे वहाँ इन डाकुओं की लेस तक भी नहीं फिर आप इस तरफ भूलकर भी ख्याल नहीं करेंगे।

मैं आपको कई दिन से समझा रहा हूँ कि भजन करना क्यों जरूरी है? इन पाँच जानी दुश्मनों से पीछा छुड़वाना क्यों जरूरी है? पवित्र जिंदगी जीने के क्या फायदे हैं और गुरु का प्यार हमें क्या देता है? मैं आशा करता हूँ कि आप इन सब चीज़ों पर अमल करते हुए अपना जीवन पवित्र बनाएंगे।

जिन प्रेमियों ने यहाँ प्रबंध किया है तन, मन और धन से सेवा की है हम सबके धन्यवादी हैं। सब बहन-भाईयों ने बड़ी सेवा की जिससे भजन करने वालों को बहुत मदद मिली। सेवक को सेवा करके कभी भी अहंकार नहीं करना चाहिए।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''अगर हम सेवा करके दान करके उस सेवा को लोगों के आगे जाहिर करते हैं तो यह इस तरह है जैसे हम अच्छा पुलाव बनाकर उसके ऊपर राख का धूड़ा दे दें।''

आप सबको पता है कि कल सुबह तीन बजे 'नामदान' होगा। कल कुछ प्रेमियों की फ्लाईट है उनकी तरफ पूरी तवज्जो रखनी है ताकि उन्हें कोई तकलीफ न आए और वे यहाँ से प्यार लेकर वापिस अपने घर जाएं।

1 जुलाई 1983

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को भजन में बिठाने से पहले हिदायतें

अमृतवेला

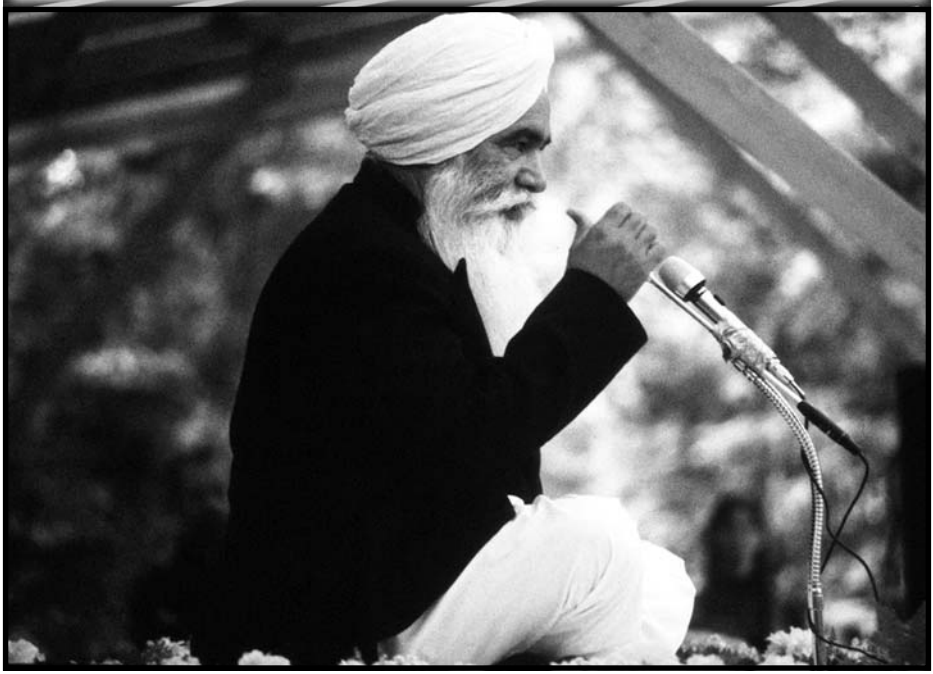

हाँ भाई! उस दयालु गुरुदेव कृपाल ने हमारे ऊपर अपार दया करके हमें अपनी याद का मौका बख्शा। हमने कई दिन बहुत उत्तम सुहावना समय व्यतीत किया। वे क्षण बड़े भाग्यवाले होते हैं जब हम परमात्मा की याद में बैठते हैं और परमात्मा को याद करते हैं। यही दिन यही साँस हमारे लेखे में हैं।

आप चाहे घर में बैठकर अभ्यास करें, चाहे किसी भी समय अभ्यास करें लेकिन अभ्यास में बैठने से पहले मन को जवाब दे दें कि तू दिन भर जो काम करता है हमने उसमें दखल नहीं दिया। अब हम अपना काम करने लगे हैं तू भी हमारे काम में दखल न दे। हमें अपने काम की अच्छी तरह पड़ताल कर लेनी चाहिए ताकि

हमें अभ्यास के समय बीच में से न उठना पड़े। हमें घंटा दो घंटे चार घंटे जितना भी समय मिलता है उससे पूरा फायदा उठाना चाहिए।

हमारा दिन दुनिया के कारोबार में गुजर जाता है और हम रात सोकर गुजार देते हैं। हमें इंसान का जामा हीरा मिला है, विषय-विकार कौड़ियां हैं। दुनिया के कारोबार हम एक किस्म की कौड़ियां ही इकट्ठी कर रहे हैं क्योंकि यह सामान हमारे साथ नहीं जाएगा। हमने साथ जाने वाली वस्तु शब्द नाम की कमाई इकट्ठी करनी है। सतसंगी को आदत डाल लेनी चाहिए कि वह जब भी अभ्यास में बैठे मन के अंदर कोई भी कल्पना न हो। मन को शान्त करना है शान्त मन ही अभ्यास कर सकता है।

अभ्यास को कभी बोझ न समझें, प्रेम-प्यार से करें। मन को बाहर भटकने न दें तीसरे तिल पर एकाग्र करें। तीसरा तिल ही हमारे सफर की शुरूआत है, हमारे घर का दरवाजा है। जब हम अंदर जाते हैं तो हमें इन पाँच पवित्र नामों की महानता का पता लग जाता है। ये नाम बड़े विशाल धनियों के नाम हैं जिन्हें अभ्यास के वक्त हमारी आत्मा ने पार करना होता है। सिमरन हमें सूरज, चन्द्रमा, सितारे पार करवाकर गुरु स्वरूप तक पहुँचाता है आगे के मंडल हमने शब्द-नाम के जरिए पार करने होते हैं।

हम जिस इंसानी जामें में रह रहे हैं क्या आपने इस इंसानी जामें के बारे में सोचा है कि यह कितना खूबसूरत है? लेकिन हम इसे बाहर बनाने-सँवारने में ही सारा वक्त खो देते हैं। अफसोस! वह परमात्मा हमारी देह के अंदर है, आत्मा भी इस देह के अंदर है लेकिन हमारी आत्मा न परमात्मा से मिली न सुहागन हुई। आप प्रेम-प्यार से अपना अभ्यास शुरू करें इस समय से पूरा फायदा उठाएं।

19.01.1986, मुम्बई

***

धन्य अजायब

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज की दया से दिल्ली में 20, 21 व 22 मई 2016 को नीचे लिखे पते पर सतसंग के कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। सभी प्रेमी भाई-बहनों के चरणों में प्रार्थना है कि सतसंग में पहुँचकर सन्तों के वचनों से लाभ उठाएं।

कम्युनिटी हाल,

भेरा इन्कलेव, पश्चिम विहार (नज़दीक पीरागढ़ी चौक)

नई दिल्ली - 110 087

फोन - 98 102 12 138, 98 107 94 597, 98 182 01 999

व

अहमदाबाद में 1, 2 व 3 जुलाई 2016 को नीचे लिखे पते पर सतसंग के कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है।

ईश्वर भवन,

क्रॉस रोड, (नजदीक कॉमर्स कालेज), नवरंगपुरा,

अहमदाबाद (गुजरात)

फोन - 99 98 94 62 31, 97 25 00 57 94, 96 38 75 20 20